बांटने का है. दोनों राज्यों में प्रत्येक की आबादी डेढ़ करोड़ से ज्यादा है. यह एक राज्य के शासन के लिए कम नहीं है. बिहार के दोनों राज्य जहां अपनी राजधानी रख सकते हैं, पटना और रांची. ये दोनों जगहें राज्यों के मध्य में पड़ती है. संयोग से आज बिहार के हिस्से झारखंड की जो सीमा है वह डॉ अंबेडकर द्वारा सुझाई गई रेखा है, जिसकी उस समय अनदेखी कर दी गई थी. डॉ अंबेडकर के सुझाव सफल होने में 47 साल लग गए. झारखंड आंदोलन के बुद्धिजीवी और रांची विवि में जनजातीय एवं क्षेत्रीय भाषा विभाग खुलवाने में अहम भूमिका निभाने वाले वीर भारत तलवार अपनी पुस्तक झारखंड आंदोलन के दस्तावेज की भूमिका में 25 जुलाई 2017 को लिखते हैं कि उम्मीद थी कि झारखंड अलग राज्य बन जाने से यहां की समस्याएं दूर होती जाएंगी, जनता का जीवन खुशहाल होता जाएगा लेकिन यह उम्मीद पूरी होती दिखाई नहीं देती. उल्टे आम जनता का जीवन बदहाल होता जा रहा है. सिर्फ मुट्ठीभर लोगों ने जो सांसद, विधायक, मंत्री बने, सरकारी अधिकारी बने या जिन्हें सरकारी ठेके मिले ऐसे मुट्ठीभर लोगों ने राज्य का जमकर फायदा उठाया और खूब कमाई की है. लेकिन आम जनता का हाल पहले से भी बुरा होता गया है. जिन समस्याओं के हल के लिए झारखंड आंदोलन किया गया था उनमे से एक का भी हल नहीं निकला. देशी-विदेशी पूंजीपतियों द्वारा झारखंड की खनिज संपदा की लूट पहले की तरह ही जारी है, बल्कि और बढ़ गई है. विकास के नाम पर बनने वाली परियोजनाओं और उद्योगों के चलते आदिवासियों का विस्थापन पहले की तरह ही जारी है. आजीविका की खोज में गांव छोड़ कर बाहर जाने वाले आदिवासी पुरूष स्त्रियों का पलायन पहले की तरह ही जारी है. काम दिलाने के नाम पर युवा लड़के लड़कियों को फुसलाकर दलालों के माध्यम से बाहर ले जाना पहले की तरह ही जारी है. राज्य बनने के सोलह साल बाद भी मूल निवासियों की एक भी बुनियादी समस्या का हल नहीं किया गया. इसका मुख्य वजह है सरकार की जनविरोधी नीतियां और राजनैतिक नेतृत्व का दलाल हो जाना. वरिष्ठ पत्रकार बलबीर दत्त अपनी पुस्तक "कहानी झारखंड आंदोलन की" में लिखते हैं कि झारखंड आंदोलन के कई नेता यह चाहते ही नहीं थे कि इस आंदोलन का अंत हो. वे इसे चलाए रखना चाहते थे. इसमें उनका निहित स्वार्थ भी था. इसमें उनके कई निजी हित सिद्ध होते थे. एक खास दौर में कुछ लोगों के लिए झारखंड आंदोलन यहां का सबसे बड़ा उद्योग बन गया था. आगरा अधिवेशन में बनी थी संघर्ष की रणनीति 1988 में भारतीय जनता पार्टी के तीन दिनी चौथे महाधिवेशन में वनांचल की मांग के पक्ष में अपनी राय जाहिर की गई। इंदर सिंह नामधारी ने भाजपा प्रदेश अध्यक्ष का नया नया प्रभार लिया था। इस महाधिवेशन बाद बिहार प्रदेश कार्य समिति की बैठक जो रांची में 30 अप्रैल 1988 को हुई थी इसमे यह निर्णय लिया गया कि छोटानागपुर और संताल परगना को मिला कर वनांचल राज्य की मांग पर संघर्ष किया जायेगा।

1. **********

सन्दर्भ:-

1.कहानी झारखण्ड आंदोलन की बलबीर दत्त
2.झारखण्ड की समरगाथा शैलेन्द्र महतो
3.झारखण्ड आंदोलन के दस्तावेज वीर भारत तलवार
4.झारखण्ड इंसाइक्लोपीडिया रणेंद्र व सुधीर पाल
5.प्रभात खबर अखबार
6.रांची एक्सप्रेस अखबार

दो हज़ार दस के बाद की महिला लेखकों की कहानियों में आत्म निर्भर नारी चित्रण

अंजना .एम्
शोधार्थी
हिंदी विभाग,केरल विश्वविद्यालय
तिरुवनंतपुरम,केरल

डॉ.आर.जयचंद्रन
आचार्य
हिंदी विभाग केरल
विश्वविद्यालय
तिरुवनंतपुरम,केरल

सारांश :हिंदी रचना क्षेत्र में पुरुष लेखन की अपेक्षा स्त्री लेखन ज़्यादा जागरूक रही है। स्त्री अपनी मनोभावों और स्थितियों को मुक्त रूप से कहानियों के माध्यम से प्रस्तुत किया है। नारी अस्मिता, स्वतंत्रता, सामाजिकता आदि विभिन्न विषयों पर आज की लेखिकाओं ने तूलिका चलायी है। गीताश्री, प्रज्ञा, उर्मिला शिरीष, सुधा अरोड़ा, वंदना राग आदि लेखिकाओं के नाम इस संदर्भ में बड़ी सम्मान के साथ लिया जा सकता है।नारी हर युग में साहित्य सृजन की प्रेरणा बनी है। समकालीन महिला लेखन में विशेषकर दो हज़ार दस के बाद की कहानियों में नारी जीवन के विविध आयामों को पूरी ईमानदारी के साथ चित्रित करने के साथ-साथ नारी की वर्तमान जीवन में क्या अहमियत है उसे भी बखूबी रेखांकित किया है स्त्री-लेखन नारी-शोषण के विरुद्ध बदलाव और क्रांति के साथ स्त्री स्वतन्त्रता पर समकालीन हिंदी कहानी विधा में सशक्त हस्तक्षेप भी करता है। डॉ. सुरेश धींगड़ा के शब्द में - "समाज में परिवर्तन अवश्यम्भावी होता है। आधुनिक संसार में समाजगत सामान्य परिवर्तन वैयक्तिक अनुभव और समाज के क्रियाशील पक्षों के व्यापक क्षेत्र को प्रभावित करते हैं। इसलिए नहीं कि समाज में एक्य के सूत्र अधिक दृढ़ होते हैं, वरन् इसलिए कि परिवर्तन की सामान्य स्थिति अथवा सम्भावनाओं से जीवन का कोई पक्ष अछूता नहीं है। पिछली कई दशाब्दियों में भारतीय समाज में कतिपय सम्भावनाओं की पूर्ति हुई है, यद्यपि उसमें पर्याप्त रिक्त स्थान शेष है.....परिवर्तन का एक और महत्वपूर्ण पक्ष है- स्त्री की स्थिति में परिवर्तन।"[1]

महिला लेखन में खासकर दो हज़ार दस के बाद की महिला लेखेकों की कहानियों में स्वतंत्र नारी का चित्रांकन ज़्यादा मिलता है। प्रज्ञा,गीता श्री, उर्मिला शिरीष, वंदना राग,सुधा अरोड़ा, नीलाक्षी सिंह आदि महिला लेखेकों की कहानियों में नारी की समस्याओं को तो उजागर किया है लेकिन ज़्यादातर कहानियों में रूढ़िमुक्त नारी की बहुविधीय पक्षों पर अपनी सूक्ष्म अंतर्दृष्टि डाली है। बदलते परिस्थितियों की वजह से नारियों में अपने हक के प्रति जागरूकता दिखाई है। युग युगों से नारी पीड़ित रही है। लेकिन आज कल स्थितियों में बहुत बदलाव आया है । आज नारी उड़ सकती है, अपने पैरों पर खड़ी हो सकती है, अपना जीवन खुद जीती है। हालांकि आज भी कुछ जगहों में नारी पूर्णतया स्वतंत्र नहीं हुई है।

प्रज्ञा की सन् 2021 में प्रकाशित कहानी संग्रह 'रज्जो मिस्त्री' की 'मौसम की करवट' कहानी में संजू नामक लड़की के

इर्द गिर्द पूरी कहानी घूमती है। संजू की शादी कम उम्र में की जाती है। माँ बाप अपने ज़िम्मेदारी से पल्ला झाड़ती है। वह शादी के बाद इतना प्रताड़ित होते ही कि ज़िंदगी के उस मुकाम में आकर वह आक्रोश करती है। गलत के खिलाफ़ आवाज़ उड़ाती है। लेखिका कहानी के अंत में कहती हैं- "सुखत सा लगता है सब सुनने में पर सहजताएँ अपने बाह्य रूप में जितनी सामान्य और सकारात्मक दिखाई देती हैं भीतर से नहीं होतीं। सभी रास्तों को बंद कर देने वाली निराशा की चट्टान को संघर्ष की धार पल-पल काटती-छीलती रहती है, पर दुनिया को न कोई चट्टान दिखाई देती है न उससे जूझते इंसान।"[2] जिन पेड़ों की जड़ें गहरी होती है वे अपने पत्तों को बच्चा ही लेते हैं। 'परवाज़' कहानी में खुशबू के पिता सबके सामने बुरा होने का स्वांग रचती है। क्योंकि खुशबू की माँ और परिवार लड़की होने के नाते उसे उड़ने नहीं देती है। खुशबू की सगा पिता ना होने पर भी अपनी बेटी के लिए आसमान की उड़ान चुनता है। उस पिता का हर झठ कितना धवल सच था। खुशबू को पूरी स्वतंत्रता देने के लिए ऐक बाप को जल्लाद पिता का नाटक करना पड़ा। प्रज्ञा की कहानियों के हर स्त्री पात्र देर से ही सही अपनी स्वतंत्रता को ही चुनती है।

भारतीय नारी पुरुष के कंधे से कंधा मिलाकर आगे बढ़ रही है। नारी उस रूढिवादी समाज के बंधनों से मुक्त होने का भरसक प्रयास करती है। प्रज्ञा की एक और कहानी संग्रह है 'तकसीम' जो 2016 में प्रकाशित हुआ है। पुरानी और अबकी स्त्री की हालत पर विशेष दृष्टिकोण डालते हुए प्रज्ञा ने कहानी विधा को सुदृढ़ किया है। इनकी कहानियों में जो जीवन चित्रित हुआ है उसमें स्त्री पहले की अपेक्षा काफी मुक्त है। इस मुक्ति के बावजूद वह पारंपरिक रूढ़िग्रस्तता में पिस रही है। 'फ्रेम' कहानी का वर्ण्य विषय यही है। स्वतंत्र मानसिकता वाली, अपनी पसंद की शादी करने वाली, आर्थिक दृष्टि से अपने आप में निर्भर रहने वाली स्त्रियां भी पारिवारिक पारंपरिक दबाव के आगे झक जाती है। इस कहानी में रावी ऐसा ही एक पात्र है। आज्ञाकारी लड़की हो तो वह अच्छी है अपने मनपसंद निर्णय लिया तो वही अच्छी लड़की बुरी बन जाती है। "रावी बड़ी ही आज्ञाकारी और अच्छी लड़की है। एक बंधक आकाश के नीचे दूसरों की दी हुई बैसाखियों पर चलते, अपने टूटे-बिखरे सपनों को खुद से छिपाते हर पल तस्वीर की रावी की रक्षा करती वह आज्ञाकारी और अच्छी लड़की नहीं तो और क्या है?" अरुण प्रकाश की भी दो कहानियां मुझे याद आईं। 'अच्छी लड़की' और 'बहुत अच्छी लड़की'।"[3]

नारी पैरों के नीचे कुचलने का कोई सामान नहीं हैं। देवी, त्याग की मूर्ति कहकर नारी को कहीं दबा दिया है। वह भी इंसान है जीती जागती स्वप्न आकांक्षा से भरी इंसान। नारी की स्वतंत्रता पर घोर भाषण देने वाले अपने घर में नारी को दबाती रहती है। आखिर यह सब कब तक चलेगा। गीताश्री की कहानियों में सहमे हुई एकांतालाप का प्रतिनिधित्व भी दिखाई देता है। उनकी कहानियों के कथ्य में गांव कस्बा एवं महानगर की नारी का वर्णन मिलता है। वे खेतों से लेकर वातानुकूलित दफ्तरों और नाइटक्लबों तक व्यापी हुई है। गीताश्री की कहानियों में किरदार ज़मीन से जुड़े सामान्य जन हैं।गीताश्री का सन् 2021 में प्रकाशित 'बलम कलकत्ता' कहानी संग्रह की कहानी 'बलम कलकत्ता पहुँच गए ना' में नीलू और शांति नामक दो नारी पात्र के ज़रिए कहानी को आगे बढ़ाई है। शांति अपने पति की नशे की लत और मारपीट सहती रहती थी। नीलू को माँ पर गुस्सा आता है कि माँ ये सब क्यों सहती है। कहानी एक ऐसे मोड़ पर आ जाती है शांति और नीलू जुल्म के खिलाफ़ खड़ी होती है। गलत के खिलाफ आवाज़ उठाकर अपने आप में विश्वास रखकर आगे बढ़ना भी स्वतंत्रता है। बेटी नीलू का विद्रोह भाव ही शांति के अंदर एक नई स्त्री को जागृत कराती है। कोने में चुपचाप पड़ी रहने वाली पत्थर की पोटली पहली बार तन कर खड़ी थीं। गीताश्री का रचनात्मक प्रयोग तारीफ की काबिल हैं।

नारी की अधिकांश समस्याओं का कारण आर्थिक समस्याएं ही होती है। आज कल की लेखिकाओं की कहानियों द्वारा लड़की को शिक्षा और अपने पैरों पर खड़ी होने की आवश्यकता पर ज़ोर देती है। ज़मीन से जुड़ी स्त्रियाँ की जिजीविषा और संघर्ष की पड़ताल है गीताश्री का बलम कलकत्ता। पूरे कहानी संग्रह की कहानियों में स्त्री की संघर्ष, अस्तित्व और जुझारुपन को अभिव्यक्ति देती है। आदर्शों एवं पारंपरिक मान्यताओं के बोझ से पिस रही नायिकाओं के अंतर्द्वंद दिखाई देती है।

गीताश्री का एक मत हमेशा से रही है कि विवाह संस्था में बंधकर लड़कियां अपनी शर्तों पर जीवन नहीं जी सकती। उनका यह मत 'मन बसंत तन जेठ' कहानी में दिखलाई पड़ता है। "बिहार की बेटी खूब पढ़ेगी शादी की सूली नहीं चढ़ेगी।"[4]

समाज में लड़कियों की योग्यता मापने के लिए लोगों ने अलग अलग चश्मे लगाते हैं। लड़की की रहन-सहन, वेशभूषा, चाल ढाल ये सब चश्मे पर निर्भर होती है। 'सोलो ड्राइवर' कहानी इसका उदाहरण है। 'अदृश्य पंखोंवाली लड़की' कहानी में नायिका अपनी शर्तों पर ज़िन्दगी को जीना चाहती है। उसे अपनी आज़ादी पसंद है। 'जैसे बंजारे को घर' कहानी की नायिका घर से भागकर कई परिस्थितियों से डटकर अपने मुकाम को पा ही लेती है। 'मन बंधा हुआ है पर जाल में नहीं हूँ' एक महानगर जोड़ी की कहानी है जो लिव-इन में रहता है। गीताश्री की कहानियों में नारी पात्र ज़्यादातर स्वतंत्र मनोभाव रखनेवाली हैं।

सन् 2015 में प्रकाशित गीताश्री का कहानी संग्रह 'स्वप्न साजिश और स्त्री' में नारी की मौजूदा स्थिति और अंतर्द्वंद के पहलू दिखाती है। उनकी कहानियों में संवेदनाओं को विशेष स्थान है। 'लेडीज सर्कल' कहानी संग्रह में शहरी खुलेपन को मात देती स्त्रियां सेक्सुएलिटी के मामले में कितनी वाचाल होती है। स्त्री को समाज में बराबरी का दर्जा और आजादी दिलाने के लिए गीताश्री जैसी लेखिका निरंतर प्रयास कर रही है।

सुधा अरोड़ा की कहानियों में स्त्री ज़िम्मेदार पात्र के रूप में दर्शाया गया है। उनकी कहानियों शारीरिक या मानसिक दोनों ही रूपों में स्त्रियों को सताया जाता । उनका कहानी संग्रह 'बुत जब बोलते हैं' की कहानी देह विमर्श की तीखी आवाजों के बीच स्त्री जीवन के किसी मार्मिक हिस्से को अभिव्यक्त करती दिखाई देती है। प्रस्तुत कहानी में लेखिका स्त्री की दरदिया बनकर साथ देती है तो दूसरी ओर उन्हें मजबूत बनाती भी है। आधुनिक स्त्री के अधिकार और उसकी स्वतंत्रता के बारे में आज की महिला लेखकों ने जो विचार प्रकट की है वह सराहनीय है। उच्च शिक्षा ग्रहण कर आत्मनिर्भर बनने से क्या वह पूर्णतया स्वतंत्र हुई है? स्त्री को शैक्षिक स्वतंत्रता के साथ मानसिक एवं दैहिक स्वतंत्रता की भी आवश्यकता है। निम्नमध्यवर्गीय स्त्रियां विद्रोह तो करती है लेकिन पारंपरिक बंधनों से मुक्त नहीं हो पाती है। परंपरागत मूल्यों को नकारना संबंधों पर दरार आने का समान है। सुधा अरोड़ा जी के अनुसार हर स्त्री का जीवन एक प्रयोगशाला है।

उर्मिला शिरीष की कहानी 'लकीर' में असमानता का भाव स्वयं माता पिता पैदा करते हैं। बेटे को हिस्सा देकर बेटी को घर से निकालता है। कहानी में उस लड़की के संघर्ष एवं स्वत्रंता की लड़ाई की कहानी है। 'उसका अपना रास्ता' कहानी स्त्री की आत्मचेतना की अपने आप से मुक्त होने की कहानी है। नारी को विषम परिस्थितियों में जीवन समाप्त न करके जीवन जीने की कोशिश करने के लिए प्रेरित करती कहानियां हैं।

निष्कर्ष:-

निष्कर्ष के रूप में कहा जा सकता है कि उर्मिला शिरीष, सुधा अरोड़ा, प्रज्ञा, गीताश्री और वंदना राग जैसी लेखिकाओं ने नारी की स्वतंत्रता का विविध पक्षों को बड़ी गंभीरता के साथ कहानियों में दर्शाया गया है। नारी आज भी पूर्णतया मुक्त नहीं हुई है। स्त्री और समाज के संबंधों के समीकरण इन लेखिकाओं की कहानियों के ज़रिए सामने आ रहा है । महिला कहानीकार मज़बूत और आत्मनिर्भर होने के लिए प्रेरणा देता है। महिला लेखकों की कहानियों में नारी पराधीनता को नहीं स्वाधीनता को चुनती है।

****

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. हिंदी कहानी दो दशक – डॉ.सुरेश धींगडा – पृष्ठ संख्या 32,अभिनव प्रकाशन,दिल्ली 1976
2. रज्जो मिस्त्री – प्रज्ञा - पृष्ठ संख्या 21,शिवना प्रकाशन, सीहोर,मध्यप्रदेश 2021
3. तक़सीम (भूमिका) - प्रज्ञा - पृष्ठ संख्या 10,साहित्य भंडार, इलाहाबाद
4. बलम कलकत्ता - गीताश्री - पृष्ठ संख्या 31,प्रलेक प्रकाशन प्राइवेट लिमिटेड,महाराष्ट्र, मुम्बई

अभिमन्यु अनत और अमिताभ घोष के चुने हुए उपन्यासों में हाशिएकृत लोगों की आवाज़ें:सबाल्टर्न अध्ययन के आधार पर

अरुंधती मोहन
शोधार्थी
हिंदी विभाग,
केरल,विश्वविद्यालय
तिरुवनंतपुरम,केरल

डॉ.आर.जयचंद्रन
आचार्य
हिंदी विभाग
केरल विश्वविद्यालय
तिरुवनंतपुरम,केरल

सारांश : साहित्य में हाशिए कृत लोगों की छोटी आवाज़ों को स्थान किस प्रकार और कैसे मिला है ?इस प्रश्न का उत्तर हम इतिहास से ले जा सकते हैं।जब तक इतिहासकारों ने इतिहास की व्याख्या अपने ढंग से की है,इसके पीछे उपनिवेश और सत्ता की पाबंदी ज़रूर होती है।एक ज़माने में इतिहास केवल राजा,नेता और उनके पल्ले पकड़नेवालों की हथौली में था।लेकिन सदियों की रफ़्तार में जनता को मालूम हुआ कि इतिहास के अनदेखे,अनछुए विचारों को लिपिबद्ध करना है।इतिहास तब से हाशिए कृतों की ज़िन्दगी और उनकी पहचान को खोजने लगा।हिंदी के नामी प्रवासी उपन्यासकार अभिमन्यु अनत ने अपने उपन्यासों के माध्यम से हाशिए पर खड़े हुए लोगों की यंत्रणा को अभिव्यक्त किया है।उपन्यास के हरेक पात्र अपने अधिकार केलिए लड़ते हैं।उसीप्रकार इंडियन इंगलिश साहित्य में अमिताभ घोष का नाम बेजोड़ है।उन्होंने एंथ्रोपोलॉजी के सहारे सबाल्टर्न अध्ययन पर ज़ोर देकर वर्ग,वर्ण,लिंग पर हुए भेदभावों को उपन्यासों का विषय बनाया।

बीजशब्द:हाशिएकृत,उपनिवेश,वर्ग,संघर्ष,वर्णभेद,साम्राज्यवाद ,सामंतवाद,दलित

अभिमन्यु अनत के उपन्यास 'लाल पसीना' में उपनिवेशवाद और साम्राज्यवाद से लड़नेवाले हाशिएकृत लोगों की ज़िदगी का वर्णन है।समाज की संरचना के अन्तर 'dominant' और 'subordinate' जैसे दो तड़के के लोग बसते हैं।power जिसके हाथ में है,उसी के अनुसार समाज की गतिशीलता है।सबसे पहले अंतोनियो ग्राम्शी ने hegemony,power जैसे सार युक्त शब्दों की व्याख्या की है।उनके अनुसार राजनीतिक,सामाजिक,आर्थिक और सांस्कृतिक तौर पर एक प्रत्येक समूह की आवाज़ें ही मुखरित है। बाकि लोग अपने को खुद निचले मानकर सिकुड़कर जी रहे हैं। अभिमन्यु अनत जी के उपन्यास 'लाल पसीना' में ब्रिटिश उपनिवेश यदि 'dominant' है तो, मज़दूर 'subordinate' है। उन्हें हम सबाल्टर्न कह सकते हैं। एक ज़माने में इंग्लैंड और ब्रिटेन में servant और peasant को सबाल्टर्न कहलाते थे।उपन्यास में तीन मज़दूर नायक हैं-कुंदन,किसन,मदन।उपन्यास के केंद्र पात्र कुंदन गोरे अफसरों और ज़मींदारों की क्रूरता का शिकार बन जाता है।सालों से वह कारावास में बंदी है।एक दिन ईख के खेत में काम करते समय उसके पैर बुरी तरह से घायल हुए।उसे जेल